चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	16.7.25	3	8

मिट्टी में जैविक पदार्थों की कमी चिंता का विषय : डा. राजबीर गर्ग

जासं • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मृदा विज्ञान विभाग द्वारा एक तकनीकी कार्यक्रम आयोजित किया गया। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष डा. दिनेश तोमर, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. रमेश कुमार सहित वैज्ञानिक उपस्थित रहे। अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने कहा कि प्रयोगों की संख्या कम होने के साथ-साथ उनकी दक्षता बढ़नी चाहिए। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे ऐसे अनुसंधान कार्यों को प्राथमिकता दें जिससे किसानों के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिल सके।

अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	16.7.25	4	6-7

रिसर्च की संख्या नहीं, गुणवत्ता बढ़ाना जरूरी : डॉ. राजबीर गर्ग

कार्यक्रम में मौजूद अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग व अन्य। स्रोत : संस्थान

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के मृदा विज्ञान विभाग में मंगलवार को तकनीकी कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि सतत खेती के उपाय खोजने के लिए अनुसंधान की संख्या नहीं, बल्कि उसकी गुणवत्ता पर फोकस करना चाहिए। उन्होंने कहा कि शोध ऐसे हों, जिनसे किसानों को व्यावहारिक लाभ मिले और पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिले।

डॉ. गर्ग ने मृदा में जैविक पदार्थों की कमी को गंभीर चिंता का विषय बताया और कहा कि वैज्ञानिकों को ऐसे समाधान खोजने चाहिए जो मृदा स्वास्थ्य, उर्वरता और उत्पादकता को बनाए रखने में सहायक हों। उन्होंने प्रेस मड जैसे जैविक खाद के उपयोग को बढ़ावा देने की बात कही, ताकि

मृदा में जैविक पदार्थों की कमी चिंता का विषय

कृषि संसाधनों का टिकाऊ उपयोग सुनिश्चित हो सके। उन्होंने सुझाव दिया कि सेवानिवृत्त वैज्ञानिकों की एक समिति गठित की जाए जो अपने अनुभव के आधार पर अनुसंधान कार्यों को दिशा दे सके।

डॉ. गर्ग ने दीर्घकालिक उर्वरक प्रयोगों की व्यापक समीक्षा और प्रभावी क्रियान्वयन पर बल दिया। साथ ही, उन्होंने मृदा से जुड़ी समस्याओं को समझने के लिए विशिष्ट अध्ययन की आवश्यकता को भी रेखांकित किया।

कार्यक्रम में मृदा विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. दिनेश तोमर, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, विवि के विभिन्न विभागाध्यक्ष और मृदा विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक उपस्थित रहे। ब्यूरो

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	16.7.25	4	1-2

मृदा में जैविक पदार्थों की कमी चिंता का विषय : डॉ. राजबीर

कार्यक्रम में उपस्थित अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग व अन्य

हकृवि के मृदा विज्ञान विभाग द्वारा तकनीकी कार्यक्रम आयोजित

हिसार, 15 जुलाई (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मृदा विज्ञान विभाग द्वारा एक तकनीकी कार्यक्रम आयोजित किया गया। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम में उपरोक्त विभागाध्यक्ष डॉ. दिनेश तोमर, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार सहित विभाग के अधिकारी, विश्वविद्यालय के सभी विभागाध्यक्ष एवं मृदा विभाग के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने अपने सम्बोधन में कहा कि प्रयोगों की संख्या कम होने के साथ-साथ उनकी दक्षता बढ़नी चाहिए। सतत खेती के तरीके खोजने के लिए गिनती की बजाय रिसर्च की गुणवत्ता पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे ऐसे अनुसंधान कार्यों को प्राथमिकता दें जिससे किसानों के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिल सके। डॉ. गर्ग ने मृदा में जैविक पदार्थों की कमी जैसे पर्यावरण से जुड़ी एक बड़ी चिंता की ओर भी वैज्ञानिकों ध्यान दिलाया। उन्होंने समस्या को समझने और हल करने के लिए खास अध्ययनों की जरूरत पर भी जोर दिया, जो मृदा स्वास्थ्य, उर्वरता और पैदावार को बनाए रखने के लिए बहुत जरूरी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	16.7.25	4	3-4

मृदा में जैविक पदार्थों की कमी होना पर्यावरण से जुड़ी चिंता : डॉ. राजबीर

भास्कर न्यूज | हिसार

हकृवि के मृदा विज्ञान विभाग ने तकनीकी कार्यक्रम आयोजित किया। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के मार्गदर्शन में हुए इस कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष डॉ. दिनेश तोमर, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, विश्वविद्यालय के सभी विभागाध्यक्ष और मृदा विभाग के वैज्ञानिक शामिल हुए। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा प्रयोगों की संख्या कम हो, पर गुणवत्ता बेहतर हो। रिसर्च ऐसी हो जो किसानों को लाभ दे और पर्यावरण की रक्षा करे। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा वे ऐसे अनुसंधान करें जिनसे आने वाली पीढ़ियों को भी फायदा मिले। दीर्घकालिक उर्वरक प्रयोगों की समीक्षा कर उन्हें बेहतर तरीके से लागू करने की जरूरत बताई। डॉ. राजबीर गर्ग ने टिकाऊ खेती के लिए पोषक तत्व, सिंचाई और फसल अवशेष प्रबंधन के नए विकल्प खोजने पर जोर दिया। मृदा लवणता और खराब जल गुणवत्ता की समस्याओं का हल निकालने की बात कही। उन्होंने फसलों में बहु-पोषक तत्वों की कमी को दूर करने के लिए पोषक तत्वों के सही संयोजन और कृषि रसायनों के साथ उनकी संगतता पर रिसर्च की सलाह दी। उन्होंने कहा कि नए प्रयोग केवल गोबर की खाद तक सीमित न रहें। प्रेसमड, प्रोम और फसल अवशेष जैसे जैविक खादों को भी शामिल किया जाए। डॉ. राजबीर गर्ग ने मृदा में जैविक पदार्थों की कमी को पर्यावरण से जुड़ी बड़ी चिंता बताया। उन्होंने कहा मृदा की सेहत, उर्वरता और पैदावार बनाए रखने के लिए विशेष अध्ययन जरूरी हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	16.7.25	5	4-5

मृदा में जैविक पदार्थों की कमी चिंता का विषय : डॉ. राजबीर गर्ग

हिसार, 15 जुलाई (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मृदा विज्ञान विभाग द्वारा एक तकनीकी कार्यक्रम आयोजित किया गया। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम में उपरोक्त विभागाध्यक्ष डॉ. दिनेश तोमर, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार सहित विभाग के अधिकारी, विश्वविद्यालय के सभी विभागाध्यक्ष एवं मृदा विभाग के वैज्ञानिक उपस्थित रहे। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने अपने सम्बोधन में कहा कि प्रयोगों की संख्या कम होने के साथ-साथ उनकी दक्षता बढ़नी चाहिए। सतत खेती के तरीके खोजने के लिए गिनती की बजाय रिसर्च की गुणवत्ता पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे ऐसे अनुसंधान कार्यों को प्राथमिकता दें जिससे किसानों के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिल सके। डॉ. गर्ग ने कार्यशाला में सेवानिवृत अनुभवी वैज्ञानिकों की एक समिति गठित करनें का सुझाव भी दिया ताकि भविष्य में वैज्ञानिक अपने अनुभव का इस्तेमाल करते हुए दीर्घकालिक प्रयोगों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए उनकी अहमियत और वैज्ञानिक सटीकता बनी रहेगी। उन्होंने दीर्घकालिक उर्वरक प्रयोगों की गहराई से समीक्षा करने के साथ-साथ उसे बेहतर तरीके से लागू करने पर भी जोर दिया। डॉ. गर्ग ने फसलों में बहु-पोषक तत्वों की कमी को पोषक तत्वों के उपयुक्त संयोजन से दूर करने और अन्य कृषि रसायनों के साथ इनकी संगतता खोजने हेतु बहु-विषयी दृष्टिकोण अपनाने की भी सलाह दी। उन्होंने कहा कि नए प्रयोगों में केवल गोबर की खाद तक सीमित न रहते हुए, प्रेसमड (गन्ने की मैली), प्रोम, फसल अवशेष जैसे जैविक खाद शामिल किए जाएं ताकि कृषि में संसाधनों का अधिक टिकाऊ उपयोग सुनिश्चित हो सके।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	15.7.2025	--	--

मृदा में जैविक पदार्थों की कमी चिंता का विषयः डॉ. राजबीर गर्ग

नभ-छोर न्यूज ⏭ 15 जुलाई

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मृदा विज्ञान विभाग द्वारा एक तकनीकी कार्यक्रम आयोजित किया गया। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम में उपरोक्त विभागाध्यक्ष डॉ. दिनेश तोमर, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार सहित विभाग के अधिकारी, विश्वविद्यालय के सभी विभागाध्यक्ष एवं मृदा विभाग के वैज्ञानिक उपस्थित रहे। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि प्रयोगों की संख्या कम होने के साथ-साथ उनकी दक्षता बढ़नी चाहिए। सतत खेती के तरीके खोजने के लिए गिनती की बजाय रिसर्च की गुणवत्ता पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे ऐसे अनुसंधान कार्यों को प्राथमिकता दें जिससे किसानों के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिल सके। उन्होंने कहा कि नए प्रयोग में प्रेस मड का इस्तेमाल किया जाए क्योंकि यह एक अच्छी जैविक खाद है, जिससे कृषि में संसाधनों का इस्तेमाल और सतत बन सके। डॉ. गर्ग ने कार्यशाला में सेवानिवृत अनुभवी वैज्ञानिकों की एक समिति गठित करने का सुझाव भी दिया ताकि भविष्य में वैज्ञानिक अपने अनुभव का इस्तेमाल करते हुए दीर्घकालिक प्रयोगों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए उनकी अहमियत और वैज्ञानिक सटीकता बनी रहेगी। उन्होंने दीर्घकालिक उर्वरक प्रयोगों की गहराई से समीक्षा करने के साथ-साथ उसे बेहतर तरीके से लागू करने पर भी जोर दिया। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने मृदा में जैविक पदार्थों की कमी जैसे पर्यावरण से जुड़ी एक बड़ी चिंता की ओर भी वैज्ञानिकों ध्यान दिलाया। उन्होंने समस्या को समझने और हल करने के लिए खास अध्ययनों की जरूरत पर भी जोर दिया, जो मृदा स्वास्थ्य ,उर्वरता और पैदावार को बनाए रखने के लिए बहुत जरूरी है। सतत प्रथाओं को बढ़ावा देने के साथ उन्होंने फास्फोरस रिच ऑर्गेनिक मैन्योर के महत्व को दोहराया। कार्यशाला के समापन अवसर पर विभागाध्यक्ष डॉ. दिनेश तोमर ने सभी अधिकारियों का धन्यवाद किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	15.7.2025	--	--

मृदा में जैविक पदार्थों की कमी चिंता का विषय : डॉ. राजबीर गर्ग

हिसार (समस्त हरियाणा न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मृदा विज्ञान विभाग द्वारा एक तकनीकी कार्यक्रम आयोजित किया गया। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम में उपरोक्त विभागाध्यक्ष डॉ. दिनेश तोमर, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार सहित विभाग के अधिकारी, विश्वविद्यालय के सभी विभागाध्यक्ष एवं मृदा विभाग के वैज्ञानिक उपस्थित रहे। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने अपने सम्बोधन में कहा कि प्रयोगों की संख्या कम होने के साथ-साथ उनकी दक्षता बढनी चाहिए। सतत खेती के तरीके खोजने के लिए गिनती की बजाय रिसर्च की गुणवत्ता पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे ऐसे अनुसंधान कार्यों को प्राथमिकता दें जिससे किसानों के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिल सके। उन्होंने कहा कि नए प्रयोग में प्रेस मड का इस्तेमाल किया जाए क्योंकि यह एक अच्छी जैविक खाद है, जिससे कृषि में संसाधनों का इस्तेमाल और सतत बन सके। डॉ. गर्ग ने कार्यशाला में सेवानिवृत अनुभवी वैज्ञानिकों की एक समिति गठित करने का सुझाव भी दिया ताकि भविष्य में वैज्ञानिक अपने अनुभव का इस्तेमाल करते हुए दीर्घकालिक प्रयोगों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। जिससे आने वाली पीढियों के लिए उनकी अहमियत और वैज्ञानिक सटीकता बनी रहेगी। उन्होंने दीर्घकालिक उर्वरक प्रयोगों की गहराई से समीक्षा करने के साथ-साथ उसे बेहतर तरीके से लागू करने पर भी जोर दिया। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने मृदा में जैविक पदार्थों की कमी जैसे पर्यावरण से जुड़ी एक बड़ी चिंता की ओर भी वैज्ञानिकों ध्यान दिलाया। उन्होंने समस्या को समझने और हल करने के लिए खास अध्ययनों की जरूरत पर भी जोर दिया, जो मृदा स्वास्थ्य ,उर्वरता और पैदावार को बनाए रखने के लिए बहुत जरूरी है। सतत प्रथाओं को बढ़ावा देने के साथ उन्होंने फास्फोरस रिच ऑर्गेनिक मैन्योर के महत्व को दोहराया। कार्यशाला के समापन अवसर पर विभागाध्यक्ष डॉ. दिनेश तोमर ने सभी अधिकारियों का धन्यवाद किया।